**समाज का न्याय**

आज भी बैठी हूँ आस लगाए

की होगी एक दिन न्याय की अन्याय पर जीत

बरसों से सहती आ रही हूँ इस अन्याय को

अब नहीं है और धैर्य इसे सहने को

कर गया है ये समाज

मुझे अंदर से खोकला

दब चुकी हूँ इस दुनिया के दबाव में

नहीं है और हिम्मत फिर से खड़े होने की

अपने आप को साबित करने की

इतने सालों की छुपी के बाद

डर लगता है आवाज़ उठाने से

दुनिया वालों का तो काम ही है आरोप लगाना

जिसके ऊपर बीती है सिर्फ वही है जाने की कैसा लगता है

सालों पुरानी बात है

पर फिर भी आज भी सबके मन में गर्मा­-गर्म है

था मेरा एक खुशहाल परिवार

थी मैं उस घर की इक बिटिया सबसे होशियार

रहती थी निगाहें मुझ पर हर किसी की

क्योंकि जवानी तो बस अभी ही मुझे चढ़ी थी

मिल चुकी थी एक अच्छी नौकरी अच्छे वेतन के साथ

शुरू हो चुका था सिलसिला,मेरा घर से अकेले आने जाने का

कामयाबी ने तो बस दस्तक ही दी थी

पर ईश्वर को ये मंजूर न था

बिखेर दिया मेरा पूरा संसार

गलती मेरी नहीं शायद मेरे चेहरे की थी

जो चाहकर भी किसी से छिपा न सकी

आ गया था वो काल

कैसे भुलाऊँ वो भयानक रात

वो रात

जब समाज ने किया था मेरा बहिष्कार

उच्छाल दिया गया था कीचड़ मेरे चरित्र पर

बिखेर दिया था मेरा पूरा संसार

पर ना जाने,इतने सालों बाद

अब ऐसा लगता है

न तो गलती उन लड़कों की थी

न तो मेरे चेहरे की

और ना इस समाज की

इसने तो बस अपना न्याय किया था

गलती तो थी मेरी लड़की होने की

गलती तो थी मेरी लड़की होने की

आज भी बैठी हूँ आस लगाए

की होगी एक दिन न्याय की अन्याय पर जीत | -गायत्री प्रियदर्शिनी नायक

**हूँ मैं एक औरत**

मैं कुछ कहती नहीं

इसका मतलब ये नहीं की मैं आवाज़ नहीं उठा सकती

मैं सबका कहना मानती हूँ

इसका मतलब ये नहीं की मैं डरती हूँ

मैं रोती हूँ

इसका मतलब ये नहीं की मैं कमज़ोर हूँ

मैं अंधेरे मैं नहीं जाती

इसका मतलब ये नहीं की मैं अंधेरे से भयभीत हूँ

मैं हर ज़ुल्म को सहती हूँ

इसका मतलब ये नहीं की मुझमे खड़े होने की हिम्मत नहीं

मैं हसती हूँ

इसका मतलब ये नहीं की मैं खुश हूँ

मैं हर अन्याय को अनदेखा करती हूँ

इसका मतलब ये नहीं की मेरी आँखें नहीं है

मैं चुप हूँ

इसका मतलब ये नहीं की मुझमे प्रतिषोध की ज्वाला नहीं

मैं कैद हूँ

इसका मतलब ये नहीं की मैं उड़ना नहीं जानती

हाँ हूँ मैं बंधी इस समाज की बेड़ियों में

इसका मतलब ये नहीं की मैं आज़ाद नहीं होना चाहती

हाँ हूँ मैं बंधी इस समाज के नियमों में

क्योंकि हूँ मैं एक औरत उन औरतों में जिन्हे नहीं है आभास अपनी जान की कीमत की और ना है आज़ादी अपनी ज़िंदगी जीने की |

-गायत्री प्रियदर्शिनी नायक

**तलाश अपनों की**

कहती है वो

सहती है वो

कैसे बताए

अब ये न कह पाये

जिया है उसने ज़िंदगी को जैसे

है हिम्मत तो ज़रा जी के बताए वैसे

जान गई है वो दुनिया की हकीकत को

इतनी कम उम्र में

कहती है वो

सहती है वो

कैसे बताए यूं जो ये प्यार उसे तड़पाये

जान गयी है है न कोई किसी के लिए

पर ना कर पायी कुछ इस नादान दिल का

जो तो ढूँढे है प्यार आज भी माँ बाप का

कैसे मनाए खुद को की है नहीं कोई यहाँ में

उसका कोई अपना इस दुनिया में

कहती है वो

सहती है वो

तड़पी है बरसों से खुशियों के लिए

लगता है बैठा है कोई इंतज़ार किए

दिखती है आज आस वो जो लगाए बैठी थी कई पहले बरसों

लगता है हो रहा सच वो सपना

इस दुनिया में हकीकत बन रहा है उसका आशियाना |

-गायत्री प्रियदर्शिनी नायक

**सौदा ज़िंदगी का**

खड़ी हूँ मैं इस आँगन में आज

जहां कभी सुनाई देती थी मेरी किलकारियों की आवाज़

कभी न मैं लौटी फिर

क्यूंकी भाग जो खड़ी हुई थी मैं उस रात

जब खड़ी थी दरवाज़े पे मेरी बारात

थी मैं तब ज़रूर समझदार

पर क्या कभी ढो पाती मैं ये जिम्मेदारियों का भार

थी भी मेरी उम्र ही क्या ?

जो संभाल पाती एक नया परिवार

ऐसी कौनसी मुसीबत न जाने पड़ी थी आन

जो मझबूर हो गए मेरे माई बापू और

कर दिया मुझे बेचने का एलान

दिल को तो ना था ये मंज़ूर इसलिए भागने को दिमाग ने कर दिया मझबूर

इतने सालों के संघर्ष में

दिया दिल ने हर काम में साथ

और किया दिमाग ने उसका सत्कार

लौटी हूँ आज मैं बनके एक पत्रकार

जो सच के साथ ढूंढ रही है आज भी अपना परिवार

नहीं मालूम है उसको कि नहीं है ज़िंदा

उसका कोई अपना यार ,रिश्तेदार | -गायत्री प्रियदर्शिनी नायक

**बढ़ते जा तू**

उठ खड़े हो तू लड़

खड़ी हूँ मैं तेरे संग

कर लेंगे मिलकर हर मुश्किल को पार

ना तू घबरा कर तू डट कर सामना

है ये समाज बना सिर्फ कहने और सुनाने को

पर तू डटे रह अपनी मंज़िलों पर

साबित कर दे गलत इन दुनिया वालों को

बता दे की तू ही है कुदरत का सबसे खूबसूरत और नायाब करिश्मा

उठ खड़े हो तू लड़

खड़ी हूँ मैं तेरे संग

कर लेंगे मिलकर हर मुश्किल को पार

ना तू घबरा कर तू डट कर सामना

लड़ेंगे तेरे उस हर हक के लिए

जो यूँ ही छीन लिया जाता है तुझसे

है तू लड़की , नहीं कर सकती तू इससे इंकार

पर लड़ तो तू सकती है अपने अस्तित्व को बनाकर आधार

बराबरी की बात तू क्यूँ करती है

तू तो है इन मर्दों से भी बढ़ कर

और नहीं है सीमीत तेरी ज़िंदगी इस चूल्हा चौकी की चार दीवारों तक |

-गायत्री प्रियदर्शिनी नायक

**देवियाँ**

तुम उको कमजोर क़हत हो

पर तुमौ भूलत रहे कि उ खुदै दुर्गा रही

तुम उको अलक्स्मी क़हत हो

पर तुमौ भूलत रहे कि उ खुदै लक्स्मी रही

तुम उको अज्ञानी क़हत हो

पर तुमौ भूलत रहे कि उ खुदै सरस्वती रही

तुम उको किसी और के संग देखत अपबित्र क़हत हो

पर तुमौ भूलत रहे कि उ खुदै सीता रही

तुम उको परभु की आराधना में लीन देखत बावरी क़हत हो

पर तुमौ भूलत रहे कि उ खुदै राधा रही

तुम उको सांत देख उको बेबस क़हत हो

पर तुमौ भूलत रहे कि उ खुदै काली जैसन संगहार करत रही

काहै क़हत हो की उका कौनो अस्तित्ब नाहीं है

पर उ तो खुदै इस सरीस्टी का निर्माण करत है |

-गायत्री प्रियदर्शिनी नायक

**सीख तू सहना**

नहीं मालूम क्या होता है ये सहना

पर नहीं चाहती वो इसे मानना

जब भी उसे लगता कुछ गलत

तो वे कहते तू सीख सहना

नहीं मालूम क्या होता ये सहना

पर नहीं चाहती वो इसे मानना

जब भी कुछ कहना चाहती

तो वे उसका मुँह बंद करवा देते

जब भी गलत को सही करने जाती

तो वे उसे पीछे खींच लेते

जब जब वो एक कदम अपने अस्तित्व की ओर बढ़ाती

तो वे उसे दो कदम पीछे ले आते

जब भी वो किताब के पन्ने पलटती

तो उसके हाथों में वे कड़ाई थमा दे जाते

जब जब अपनी ज़िंदगी के फैसले खुद करना चाहती

तब उस पर लगाम कस दी जाती

दिल तो है बहुत दुखता उस मासूम की लाचारी को देख

पर अफसोस है है हिस्सा हम ऐसे समाज के

जो नहीं चाहता बढ़ाना हमे

सालों से सहती आई हूँ इसे

फिर भी दिखती है उड़ान उसके आँखों में आज भी

नहीं जानता है ये समाज कोई किसी को भी

इसलिए कहूँगी तू ना लगा किसी से आस भी

पहल तू कर अपनी आज़ादी के लिए

पीछे हम तेरे दिखते पड़ेंगे

तेरी आज़ादी के लिए हम लड़ पड़ेंगे

और अगर है प्यार अपने अपनों से जो नहीं है तेरे अपने

तो तू सीख सहना क्योंकि यहाँ यही है ज़िंदगी एक औरत की जीना |

-गायत्री प्रियदर्शिनी नायक

**गलती हमारी नहीं है**

गलती हमारी नहीं है

फिर भी ये दुनिया हमें ही गलत ठहराती है

गलत भी हमारे साथ होता है

और गलती करने वाले की सज़ा भी हमें ही भुगतान करना पड़ता है

गलती उनकी नहीं जो हमारे साथ गलत करते हैं

गलती तो लड़की की चाल चलन या कपड़ों को दे दी जाती है

क्यूँ लड़कियों को ही दहलीज़ में बांध कर रखते हो?

क्यूँ नहीं उन नामर्दों को चौराहे पर तुम जलाते हो ?

गलती तो तुम हमारे कपड़ों की या चाल चलन को दे देते हो

तो भला उस आठ साल की आसिफा के कपड़ों में क्या खराबी थी

जो मासूम उस शाम अपने घर न लौटी थी

और उन दरिंदों ने उसे नोच था खाया

कभी सुना भी है दूसरे देशों की ऐसी वारदातें

भला तुम भी कैसे सुनो , वहाँ तो कानून का खौफ ही काफी रहता है

अरे ओ दुनिया वालों क्यों ये झूठे आंदोलन करते हो

साबित होने पर भी कानून जिसे सज़ा न दे पाये

क्यूँ नहीं तुम भरे बाज़ार में उसके सर कलम करवाते हो?

देखें तो ज़रा कैसे ये कानून भरी जनता को सलाखों के पीछे करता है

न जाने कैसे इकीसवी सदी है ये जहां पढे लिखे गवार रहते हों

इससे बेहतरीन भारत तो वैदिक सदीं का हुआ करता था

जहां ऐसी शर्मनाक वारदातों का नामो निशान नहीं हुआ करता था

कहती मैं उन माओं से ऐसे बेटे पैदा करने से पहले क्यूँ नहीं मार देते इन्हें ?

गलती हमारी नहीं है

और आवाज़ उठाने की इज़्जाजत भी हमें नहीं है

पर अब बहुत जी लिए अंधेरे में और छुपी में

अब गलती हमरी नहीं है

ये हम खुद से प्रण करते हैं |

-गायत्री प्रियदर्शिनी नायक

**अपने लगे गैर**

हताश हो चुका हूँ ज़िंदगी से

अब क्या कहूँ किसीसे

हद पार कर दी है सबने

और नहीं जिया जाता है अब हमसे

कभी ना मांगा कुछ इस जिंदगी से

फिर भी ये लेता गया हमीं से

जब तक थी शौहरत किया सबने अपना

पर जिसे हमने चाहा अपना बनाना

क्यों उसी ने ही कर दिया है पराया

काश वक़्त को रोकने का हुनर हमारे पास होता

तो शायाद आज हमारा ये हाशर ना होता

की है मोहब्बत सबसे हमने

फिर भी मिली हमें नफरत ही बदले में

गलती ही क्या है ये तो बता दो

ताकि शिकयात का मौका मिले नहीं फिर आपको

हम तो हैं ही नासमझ पर आप तो नहीं

पर अभी जारी है कोशिश हमारी सबको अपना बनाने की |

-गायत्री प्रियदर्शिनी नायक

उड़ रहा धुआं

बनी है ये ऐसे पदार्थों से

फिर भी पी लेते हो तुम उसे

यूं तो मौत से डरते हो

फिर कैसे भला इसका स्वागत करते हो

हंस-हंस कर अपनी मौत का

छपवाते हो न्यौता

उड़ाते हो धुआँ

और खोदते हो अपनी मौत का कुआं

मना करने पर भी नहीं मानते

आस-पास के लोगों के बारे में एक पल भी ना सोचते

यूं तो अपने परिवार के लिए भिड़ जाते हो

पर अपने परिवार के लिए ये धुआँ ना छोड़ पाते हो

हो जवान या हो बूढ़ा

लगती है जब इसकी लत ये किसी की ना है सुनता

किसी करतब की तरह कभी नाक या मुँह से उड़ाते हो तुम ये धुआँ

एक पल में नहीं

पर धीरे-धीरे ही सही

ये धुआँ कर रहा तुम्हें अंदर से खोखला

तुम्हारे परिवार और उज्ज्वल भविष्य का घोट रहा गला |

-गायत्री प्रियदर्शिनी नायक

**बाल विवाह**

अस्तित्व ना रहा खुद का

जनी किसकी कोख से ?

होश ना था चली आँगन किसके ?

अरमा ज़िंदगी जीना

कुदरत ने दिया तोफ़ा

इस समाज ने

रोती हुई चीख़ों से प्रथा कह छीन लिया

बचपन बचपने में नहीं गलतफहमियों में गुज़रा

समझ दुनिया-दारी की थी कहाँ

बिन्द कह अंजान को हाथ थमा दिया

समझ आई थोड़ी वक्त के ढलते

देर हो चुकी खुद के लिए खड़े होने की

आग जो तब लगी

रोती हुई चीख़ों से ज़िंदगी छिन गयी

आग जो ज़हन में अब लगी

ज़िंदा जीने की उमंग है जगी

लड़ पड़े प्रथा से

लड़ पड़े समाज से

जान गए आज़ादी की ज़िंदगी भीख से नहीं

जीत से जीती जाती है

कह दिया नहीं है इस नियम के घेरे में

अकेले है काफी ज़िंदगी जीने के लिए

लगाम कसी कईयों ने हमरी ज़ुबान की

पर जब थे हौसले बुलंद

तो मजाल है किसी की

मौत भी हुई मंजूर

जो बन गए जलती मशाल कईयों की |

-गायत्री प्रियदर्शिनी नायक

**दूरियाँ**

रोज़ सूरज की तरह

उम्मीद की किरने जाग उठती है

पर शायाद शाम तक

उन्हें कहीं भूल ही आते हैं

कोशिश रहती है सब सही करने की

पर ये अपने हैं कि उसे गलत में तबदील कर ही देते हैं

फिर भी कोई शिकायत नहीं रखते

इस बात पर की कल हम इनका भरोसा जीत ही लेंगे

रोज़ आंखे बंद करते है

इस उम्मीद में की हमारा कल

आज से बेहतरीन होगा

और इसी के सहारे आज तक ज़िंदा ही रहे हैं

शायद हम में ही कुछ खामियाँ होगी

वरना क्यूँ कुछ अपनों ने यूँ पराया कर दिया

जिसे ज़ुबान से बयान करना

अब सज़ा बन गया

अपनों ने तो यूँ साथ छोड़ा

की अब तो ये वीरान दीवारें ही हाल बता देती हैं

शाम घर लौटते

तो इन्हें ही निहार कर अपनों का एहसास पा लेते |

-गायत्री प्रियदर्शिनी नायक